डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर के विचार : आज के सन्दर्भ में

कुमार प्रमुदित*

किसी भी महापुरुष के विचारों की सबसे बड़ी शोकातिका यह होती है कि–बाद की पीढ़ी के लोग पूजने लगते हैं। उनकी ऐतिहासिक भूमिका को वह स्वीकार तो करती है, परन्तु उनके विचारों को वह किताबों में बन्द रखती है। अगर उस व्यक्ति के विचार विशिष्टकाल ओर सीमा में बद्ध हो तो बाद की पीढ़ी की ऐसी प्रतिक्रिया स्वाभाविक ही कहलाएगी। परन्तु उस व्यक्ति के विचार अगर गतिमान हो, नए संदर्भ और काल की दृष्टि से नया अर्थ देने की ताकत अगर उन विचारों में हो तो वर्तमान पीढ़ी का उनके विचारों के प्रति यह व्यवहार ऐतिहासिक दाम के प्रति बेईमानी होगी। भारत जैसे देश में तो किसी महापुरुष के विचार और व्यक्तित्व को लेकर कई खतरे पैदा हो जाते हैं। संविधान बनने के पहले तक अम्बेडकर जी एक विवादास्पद, व्यक्ति थे, लेकिन संविधान का मसौदा बनने के बाद उनके स्वरूप को देखकर और संविधान सभा में उनके भाषण सुनकर उनके प्रति सारा संदेह खत्म हो जाता है। लेकिन उनकी मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों और सवर्णों ने उन्हें एक जाति तक सीमित करने का प्रयत्न किया। बाईबल में एक सुन्दर वाक्य है–''मनुष्य जब ईश्वर बनने की कोशिश करने लगा तब ईश्वर ने पृथ्वी पर अनुयोयियों को भिजवा दिया। अर्थात् बाबा साहेब के विचारों और स्वप्नों को प्रत्यक्ष में लाने के बजाय उनके अनुयायी उनके नाम की पूँजी बनाकर अपने व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ण करने में लग गए, वहीं दूसरी ओर सवर्णों ने जीते जी तो तकलीफें दी पर उनकी मृत्यु के बाद भी उनके विचारों की सतत् उपेक्षा की। समाज परिवर्तन की प्रक्रिया कई स्तरों पर और कई पद्धतियों से चलने वाली एक अखण्ड प्रक्रिया है। व्यक्ति या वर्ग के समूह से जब समाज बनता है तो धीरे–धीरे कुछ नियम–उपनियम बनाए जाते हैं जिनको समूहमन बनाता है। इस मूल में बात केवल इतनी होती है कि–उस समाज में स्थित प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तित्व विकास के अवसर प्राप्त हो। मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करा लेने के लिए किसी और पर जबरदस्ती न हो, प्रत्येक को विकास के अवसर उपलब्ध करा देना किसी भी समाज की पहली और अन्तिम नैतिक जिम्मेदारी होती है।

प्रत्येक युग के अनुसार व्यक्ति की आवश्यकताओं में आशा–आकांक्षाओं में और महत्वाकांक्षाओं परिवर्तित होने लगता है। नई आकांक्षाएँ पुरानी चौकठ द्वारा पूर्ण करना संभव नहीं हो पाता इसलिए विद्रोह अनिवार्य सा हो जाता है। इस वजह से प्रत्येक देश, समाज और धर्म में विद्रोही और क्रांतिकारी महापुरुष जन्म लेते हैं और तत्कालीन समाज को नई दिशा देते हैं। डा0 बी0आर0 अम्बेडकर इसी परंपरा के विद्रोही पुरुष हैं।

व्यवस्था परिवर्तन का कार्य हमेशा तीन स्तरों पर चलता है, इन तीन स्तरों पर सतत् क्रियाशील होने के बाद ही परिवर्तन की सम्भावना होती है। लेकिन यह जरूरी नहीं कि एक ही व्यक्ति तीन स्तरों पर करें। पहला स्तर बौद्धिक स्तर का होता है जिसमें ऐसे शास्त्र जो स्थिरिता की गति की बात करते हैं और परिवर्तन विरोधी होते हैं, उनकी अवैज्ञानिकता तर्क और प्रमाणों के आधार पर सिद्ध करने की होती है एवं बौद्धिक स्तर पर लड़ाई लड़ने की होती है। जिस पर डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर अपनी बौद्धिक ताकत से इन सभी चुनौतियों का उत्तर दे रहे हैं।

* **शोधछात्र, डॉ. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी**

दूसरी शक्ति उन उपेक्षित और नकारे गए तथा परिवर्तनवादी शक्तियों के संगठन से जुड़ी होती है। ऐसे संगठन के अभाव में परिवर्तन की प्रक्रिया गतिमान नहीं हो सकती। बहिस्कृत हितकारणी सभा, स्वतंत्र मजदूर पाटी, सेड्यूल कास्ट फेडरेशन तथा अन्त में रिपब्लिकनन पार्टी, उनके दूसरे स्तर पर के प्रयत्न को स्पष्ट करते हैं।

तीसरे स्तर की लड़ाई अधिक कठिन, साहसपूर्ण और बहुत बड़ी कीमत माँगने वाली होती है। यहाँ संगठित शक्ति को संघर्ष के लिए, परिवर्तन के लिए मैदान में उतरना पड़ता है। संगठित शक्ति का दबाव व्यवस्था पर लाकर परिवर्तन के लिए मुझे विवश करना पड़ता है।

इन तीन भिन्न मोर्चों पर संघर्ष करते हुए परिर्वन लोग के प्रयत्न परम्परा में हुए है। जनातांत्रिक व्यवस्था में परिवर्तन के लिए पत्रकारिता और विधानसभा एवं संसद में प्रतिनिधि बनकर परिवर्तन के अनुकूल वातावरण तैयार कर संविधान और कानून द्वारा अपेक्षित परिवर्तन लाना। जो आज भी इसका बहुत बड़ा योगदान है, जिसके माध्यम से बाबा साहब अम्बेडकर अकेले ही लड़ते रहे।

भारतीय संविधान में दलितों को आरक्षण और संरक्षण देने के मूल में उनकी यह रणनीति भी कि अगले कुछ वर्षों में समाज समता के निकट आ जाएगा और सभी को समान शिक्षा मिलेगी जिससे समाज में सामंजस्य आएगा। लेकिन अभी भी धरातल पर यह पूरी तरह से संचालित नहीं हो पायी है। सबके मूल में भी भारतीय सामाजिक जाति व्यवस्था अभी कार्य कर रही है।

भारतीय राजनीति पर डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर का प्रभाव आज भी है। अर्थात् शिक्षा के प्रचार–प्रसार और सुविधाओं के कारण दलितों की आशा–आकांक्षाएं बढ़ रही हैं। उन्हें मूर्तरूप देने के लिए वे दबाव की राजनीति का उपयोग कर रहे हैं। लोग नाराज न हो इसलिए उनके साथ समझौते हो रहे हैं।

दलितों की इस दबाव की राजनीति के कारण उनके मतों के आकर्षण के कारण प्रत्येक पार्टी उन्हें अधिकाधिक सुविधाएँ देने की घोषणा कर रही है अथवा उनके आरक्षण व संरक्षण को बनाएं रखने का आश्वासन दे रहे हैं। इस प्रकार की सुविधाएं या आरक्षण–संरक्षण से दलितों की सर्वांगीण प्रगति सम्भव नहीं है ऐसा स्वयं बाबा साहब भी कहते थे। लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। बाबा साहब वर्ण व्यवस्था की मानसिकता को बदलना चाहते थे उसे मिटाना चाहते थे। समाज के सभी तबके वर्ण और जाति के दड़बों से बाहर आएं और मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखे, ऐसा उनका सपना थां कल्याणकारी राज्य दलितों की शिक्षा के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान करेगा, केवल दलित ही नहीं संपूर्ण समाज शिक्षित हो जाएगा, उसमें प्रखर वैज्ञानिक और जनतांत्रिक दृष्ट्रि विकसित होगी ऐसी उनकी आशा थी। आरक्षण के कारण प्रशासन के सभी क्षेत्रों में अब तक नकारे गए वर्ग के लोग आएंगे और अधिकार तथा प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाने के बाद भी वे अपने वर्ग के प्रति प्रतिबद्ध रहेंगे ऐसा उनका मानना था।

जनतंत्र और शिक्षा के कारण सार्वजनिक जीवन में से विशिष्ट जाति या धर्म का महत्व औरों को पहचानेगा। ऐसा उनका विश्वास था। उनका सारा लेखन, उनके भाषण, उनके ग्रन्थ, उनका राजनीतिक और सामाजिक जीवन इसी दिशा में अग्रसर था। स्वतंत्र भारत में राज्य और केन्द्र शासन, प्रशासन, शिक्षा और सामाजिक परिवेश इतना बदल जाएगा कि मनुष्य को विशुद्ध मनुष्य के रूप में ही देखा जाएगा, और तभी सम्मान के साथ जी सकेंगे। प्रसिद्ध समाजवादी विचारक मधुलिमये जी कहते हैं– व्यवस्था पर नियंत्रण मुठ्ठीभर लोगों का है। हजारों वर्षों से जो स्थिति थी उसमें मौलिक परिवर्तन नहीं

आया केवल शब्द बलते हैं, व्यवस्था का ढाँचा बदला है, परन्तु उसे नियन्त्रित करने वाली शक्तियों में कोई अन्तर नहीं आया हैं?

डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर को यह बात पता थी कि जब तक दलित शिक्षित नहीं होगा, तब तक वह संघर्ष को नहीं समझेंगे, और तब जाकर वह संगठित हो सकेंगे तभी वह समाज की विचारधारा को बदल पायेंगे।

हालांकि सच्चाई यही है कि–डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर द्वारा दिया हुआ मार्ग आज दलितों को एक तटस्थ मार्ग पर ले जा रहा है, लेकिन समाज के सभी वर्ग के लोगों को भी उनको साथ देना होगा तभी जाकर यह कार्य पूरा हो सकता है। हालांकि परिस्थितियाँ विपरीत होते हुए भी परिणाम इतने निराशाजनक नहीं है। दलितों की प्रगति के सन्दर्भ में देश स्पष्ट दो हिस्सों में बट चुका है। विध्यांचल के नीचे के प्रदेश में दलितों को अधिकाधिक सुविधाएँ दी जा रही हैं, जीवन के सभी क्षेत्रों और ज्ञान–विज्ञान की सभी शाखाओं, उपशाखाओं में यह वर्ग तेजी के साथ प्रगति कर रहा है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में इस वर्ग की प्रतिभा पूरी निष्ठा के साथ संघर्षशील है। महाराष्ट्र में तो दलित पत्रकारिता ने अपना स्वतंत्र स्थान बना लिया है। गुजरात, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में पत्रकारिता के क्षेत्र में इस वर्ग की कई प्रतिभाएँ क्रियाशील हैं।

साहित्य के क्षेत्र में मराठी में ''दलित साहित्य'' नाम से अभिव्यक्ति का स्वतंत्रता विश्व ही बड़ा कर दिया है। साहित्य की परंपरा में पहली बार इस उपेक्षित वर्ग की यातना को शब्द–बद्ध किया गया। 1984 से 1990 तक के कालखण्ड में साहित्य अकादमी में मराठी की जिन कृतियों का सम्मान किया उसमें से तीन आत्मचरित्र है और वे दलित और आदिवासी विमुक्त समाज से जुड़े हुए है। अत्यन्त सशक्त और जीवंत कविता इस साहित्य आकार की विशेषता है। कविता, आत्मकथा, नाटक और कहानी, इन चार विधावों में दलित संवेदनाओं की अभिव्यक्ति हो रही है। पारंपरिक साहित्य की मान्यताओं को तोड़कर उन्होंने लेखन किया है। इस साहित्य ने एक नया सौंदर्यशास्त्र दिया है। नई समीक्षा पद्धति दी है। स्वतंत्र भाषिक चेतना को उभारा है। इन सभी साहित्यकारों ने अम्बेडकर जी को ही अपने प्रेरणास्रोत के रूप में देखा है। उनके व्यक्तित्व और विचारों के कारण ही इसका पहला विस्फोट मराठी में हुआ। राजनीति के अन्तर्गत बाबा साहब का प्रभाव अमिट है। भारतीय राजनीति दलित शक्ति को नकारकर न सत्ता पर आ सकती है और न कोई कार्यक्रम कार्यान्वित कर सकती है। इन्हें नकारने का अर्थ है अपनी या अपनी पार्टी की राजनीति हत्या करना है। इस कारण प्रतिगामी शक्तियां भी इन्हें मन मारकर क्यों न हो स्वीकारती है। प्रौढ़ मताधिकार और संसद और विधानसभा के स्थानों में आरक्षण–ये दो ऐसी व्यवस्थाएं हैं जिनके कारण राजनीति में इस वर्ग को नकारकर कोई आगे नहीं बढ़ पाता। जाति निर्मूलन यह असंभव प्रक्रिया नहीं है–ऐसा अम्बेडकर साहब का मानना था और इसको सिर्फ एक माध्यम से तोड़ा जा सकता है, वह है अन्तर्जातीय विवाह पद्धति।

दलितों के भीतर अपनी अस्मिता के प्रति अहसास की एक चिनगारी डॉ बाबा साहब ने पैदा की और यह निरन्तर बढ़ती जा रही है। जिससे उनकी संवेदनशीलता जो मृत थी वह अब जाग उठी है और वे दिन–प्रतिदिन अपने को मजबूत करने में लगे है। इतिहास में ऐसा पहली बार हो रहा है कि–वह वर्ग सवर्णों के खिलाफ आक्रामक मुद्रा धारण करके बड़ा है। अन्य लोगों को विशुद्ध मनुष्यता के धरातल पर इन्हें स्वीकारना होगा क्योंकि आने वाले युग का तकाजा तो यही कहता है।

सन्दर्भ :

1. महाराष्ट्र टाइम्स, सितम्बर, 1990।
2. डॉ0 अम्बेडकर तत्वज्ञान : प्राचिति आणि आविष्कार : तारा चन्द बाडेकर।
3. महामानव बाबासाहब अम्बेडकर : प्रभाकर वैद्य।
4. डॉ0 बाबा साहब अम्बेडकर : भालचन्द फड़के।
5. डॉ0 बाबा साहब अम्बेडकर : धनंजय कीर।